व्याख्यान - 13

बी.ए. I

NRB

रश्मिरथी
टिप्पणियाँ
प्रथम सर्ग

पुनीत अनल = पुण्यवश ही तो अग्निदेव न केवल स्वयं पवित्र, बल्कि पवित्र करनेवाले हैं। वस्तुतः यहाँ 'पुनीत' शर्त है, महाभारत-काल में सांख्य मत था कि समस्त अस्तित्व पाँच महाभूतों (भूमि, जल, अग्नि, वायु और आकाश) का नाना रूप है। मनुष्य की प्रकृति में अग्नि के लक्षण - तेज, पवित्रता, निर्भयता, ज्योतिकामना आदि हैं। किन्तु, नींद, आलस्य, ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, निर्ममता आदि भी तो इसी के लक्षण हैं। अतः अग्नि के मात्र अच्छे लक्षणों को नमस्कार, उन्हीं की जयकामना।
वृन्त = प्रसवबन्धन। फल-फूल की जड़, मेंटी।
नमस्य = नमस्कार करने योग्य।
इतिहास में लीक खींचना = अभूतपूर्व कार्य कर दिखाना। द्वन्द्व-युद्ध = वह युद्ध, जिसमें केवल दो परस्पर लड़ें।
कृपाचार्य = महर्षि गौतम के पुत्र शरद्वान थे, जो बाणों के साथ पैदा हुए थे। उनके यहाँ एक पुत्र कृप या कृपाचार्य और एक कन्या कृपी का जन्म हुआ। महाराज शान्तनु ने उन दोनों का पालन-पोषण किया। कृप धनुर्विद्या में निष्णात थे। कृपी का विवाह आचार्य द्रोण से हुआ।

Scanned with CamScanner

भरतवंश = महाराज सर्वदमन भरत, दुष्यन्त और शकुन्तला के पुत्र थे। उसी वंश में संवरण हुए जिन्होंने भरतवंश का यशोविस्तार किया। संवरण के पुत्र कुरु थे, जो कौरवों और पाण्डवों के पूर्व-पुरुष थे। अवतंस = भूषण। श्वपच = कुत्ते का मांस पकाने-खानेवाला, चाण्डाल। अंगदेश = गंगा तट पर स्थित प्राचीन राज्य। वर्तमान बिहार के भागलपुर और मुंगेर आदि जिले। हया = लाज। प्रतिबल = जोड़ का बली, प्रतिद्वंद्वी।

विनीता कुमारी
27-04-2020

Scanned with CamScanner